

22 नवम्बर

मैंने एक पुस्तक में पढ़ा कि विदेश में किसी राष्ट्र में एक ऐसा म्यूज़ियम है, जहां पर एक बड़ी अदभुत मशीन रखी हुई है। उस मशीन का सौन्दर्य यह है कि उस मशीन में सारे पुर्जे जितने भी लगे हुए हैं, वह सारे चलते हैं। जितने भी उसके पुर्जे हैं, (all parts of that machine) सभी चलते हैं, पर आपस में उनका समन्वय नहीं है। थोड़े-थोड़े फासले पर एक-दूसरे से रह जाते हैं, थोड़े-थोड़े फासले पर और समन्वय न होने के कारण उस मशीन का नाम रखा गया निरुद्देश्य (Devoid of objective)। उस मशीन का कोई लक्ष्य नहीं है। चलती है, देखने में सुन्दर है, बड़ी मशीन है, दिखती शक्तिशाली है, पर उसके भीतर आपस में समन्वय न होने से वह मशीन न तो कोई उत्पादन कर सकती है और न ही वह मशीन मोटर बन कर कहीं जा सकती है। चलती अवश्य है। चलती हुई बहुत सुन्दर लगती है। अच्छा प्रतीत होता है जैसे बहुत कुछ हो रहा है। बहुत कुछ होने की प्रतीति देने वाली मशीन निरुद्देश्य है (Without any objective, devoid of objective), क्योंकि वह मशीन आपस में न तो समन्वित है, न अनुशासित है।

म्यूज़ियम में ऐसी मशीन रखने का तात्पर्य मनुष्य को दिखाना है। एक मशीन के रूप में एक प्रकार का (Personification) उसे समझाने की चेष्टा करना कि जीवन बाहर से कितना भी सुन्दर हो, बाहर से कितना भी प्रभावी दिखे, पर अगर भीतर अनुशासित और समन्वित (Disciplined and synchronized, both have to be understood, Disciplined and synchronized) नहीं होगा तो उस निरुद्देश्य मशीन की भांति बहुत प्रभावी दिखेगा, पर पहुंचेगा कहीं नहीं। हमारे साथ भी कुछ ऐसा होता है, हम सभी के साथ। भीतर से हमारा मन न टिकना, विचार न रुकने, भागते रहना, भागते रहना, बाहर स्थिर दिखते हुए भी भीतर भागते रहना। इसका कारण क्या है? कारण यही है कि अनुशासन नहीं है, समन्वय नहीं है। अनुशासन और समन्वय जीवन की छोटी-छोटी बातों से इस मन को भी बांधता है।

हमें बहुत अधिक आरम्भ में ज्ञान नहीं होता। हमारी छोटी-छोटी गतिविधियां, हमारे छोटे-छोटे बन्धन भीतर बहुत बड़े स्तर पर अनुशासन और समन्वय की स्थापना करते हैं। इन छोटे-छोटे सूत्र का पालन करते हुए बड़े स्तर के संयम को प्राप्त हुआ जा सकता है। उच्च श्रेणी के समन्वय (Synchronicity of the highest degree) प्राप्त किया जा सकता है।

ध्यान आपको पूरी चेष्टा कराता है समन्वय करने का अवसर देता है कि (You get aligned) आप Organize हो जाओ, समन्वित हो जाओ। भीतर सामंजस्य बैठे, पर चूंकि अनुशासन का अभाव जीवन में होता है, इसलिए वह जितना भी ध्यान का सामंजस्य है, जो उस एक घन्टे में आप प्राप्त करते हो, दिन भर में बिखर जाता है। इसलिए अब आपको इसे पूरक देना होगा (Something to support upon)। क्या? अनुशासन। अनुशासन से जो पूरक बनेगा, उसे आप ध्यान में प्राप्त समन्वय, सामंजस्य (Alignment, synchronicity) अर्थात् जो आप ध्यान से प्राप्त करते हो, वह टिकेगा, बिखरेगा नहीं।

ध्यान अपने आप में बहुत कुछ है, इसमें कोई सन्देह है ही नहीं, पर बाकी के जीवन को नकार देना और केवल सारी आशाएं प्रातः के ध्यान से ही बनाए रखना, यह न्यायोचित नहीं है (Not justified)। आवश्यक है कि अनुशासन के छोटे सूत्र अपने साथ हम अवश्य जोड़ें। कौन सा अनुशासन जोड़ें? कैसा जोड़ें? निर्णय आपका है। मैंने पूर्व में भी कहा था कि आपको हमारे यूट्यूब चैनल पर Miracles of Internal Growth – यह एक सीरीज़ है, जो 2009–10 में हमने रिकॉर्ड की थी, “आन्तरिक विकास के उत्कर्ष के चमत्कार” (Miracles of Internal Growth) आप में से बहुतों ने देखी है। उसे एक बार पुनः देखो और उससे कुछ न कुछ अनुशासन लेने की चेष्टा करो।

मेरे व्यक्तिगत जीवन का यह पूरा अनुभव है। मेरे छोटे-छोटे अनुशासन जब टूटते हैं, वह भले ही किसी भी कारण हो, उदाहरण के लिए; दो-तीन त्यौहार आ गए, एक-दो जन्मदिन आ गए, तो क्या होगा? चार-पाँच इक्ठ्ठे ऐसे अवसर आ गए Celebrations घर में, तो अनुशासन बिखरेगा, स्वाभाविक है। कुछ न कुछ आप व्यतिरेक करते हो खान-पान का, उठने-बैठने का भी,

और उसका प्रभाव फिर कई दिनों तक बिखराव बनाता है। इसलिए आवश्यक है कि अनुशासन के प्रति सजगता इतनी रहे कि आप अपने आपको बिखरने न दें, क्योंकि इसका सबसे बड़ा प्रभाव एक ही जगह पड़ता है, मन टिकता नहीं, विचार रुकते नहीं। अजीबो-गरीब से विचार हर पल हांकते रहते हैं। कभी डराने वाले, कभी ईर्ष्या करवाने वाले, कभी अधूरेपन में कुछ पाने वाले। इनकी तो जीभ लपलपाती है और मनुष्य को यह नचा-नचा कर थका मारते हैं, उस मशीन की भांति जो उस म्यूज़ियम में लगी है, जो चलती है, 24 घन्टे चल सकती है, पर पहुंचेगी कहीं नहीं, निरुद्देश्य मशीन है।

उस निरुद्देश्य मशीन की भांति मनुष्य का जीवन चलता है, पर पहुंचता नहीं कहीं। खर्च होता है, थक जाता है, पर उपलब्ध धेला नहीं होता। इसलिए अनुशासन बहुत आवश्यक है। *Miracles of Internal Growth* देखो और उससे अनुशासन लो और चेष्टा करो। असफलता से डरने की आवश्यकता नहीं है। केवल सफलता की ओर चलने वाले लोग अधूरे होते हैं, बड़ी जल्दी घबरा जाते हैं, बड़ी जल्दी मैदान छोड़ कर भाग जाते हैं, बहुत जल्दी ढेर हो जाते हैं। पर असफलता को भी शिरौधार्य करने वाले टिकते हैं, डटते हैं, हटते नहीं हैं, क्योंकि वह संकल्पित कितनी भी असफलता प्राप्त हो, कितनी भी, वह एक बात को भीतर स्थापित कर चुके कि जीवन *One-way ticket* है, आगे ही जाना है, पीछे की टिकट नहीं है मेरे पास। मुझे हजार असफलताओं में भी फिर उठ कर प्रयास करना है। यह भाव साधक तुम्हें अपने भीतर बनाना होगा।

अपने अस्तित्व को बटोरो। जो लोग लुंज-पुंज, ढीलापन, अपने आपको छोड़ देते हैं, वह बड़ा घातक होता है। उसके सबसे दुष्परिणाम मन-मण्डल पर होते हैं। हम और किसी को नहीं, अपने ही आपको त्रस्त करते हैं (*None else, but we ourself torment ourself*)। हम स्वयं को ही त्रस्त करते हैं। इसलिए अनुशासन की आवश्यकता है। कोई भी अनुशासनहीनता, जीवन में ढिल-पुल, उसका दुष्परिणाम और उसकी घनघोर आंधियां खोपड़ी में झेलनी पड़ेंगी। खोपड़ी उस मशीन की तरह रात-दिन चलेगी, पर पहुंचेगी कहीं नहीं, उत्पादन धेले का नहीं होगा।

इसलिए अनुशासन पकड़ो, स्वेच्छा से पकड़ो। आहार का पकड़ो तो केवल वजन घटाने के लिए नहीं, सुन्दर दिखने के लिए नहीं। सुन्दर दिखने और वजन घटाने वाले आहार के संयम तो बहुत लोग करते हैं, पर उनका जीवन अनुशासित नहीं होता। आहार का संयम बड़ा आवश्यक है, विचार का संयम बड़ा आवश्यक है, व्यवहार का संयम बड़ा आवश्यक है, अर्थ का संयम बड़ा आवश्यक है, समय का संयम बड़ा आवश्यक है, व्यवहार का संयम बड़ा आवश्यक है, उद्देश्य का संयम बड़ा आवश्यक है, पर इनके पीछे के कारण भी ऊंचे होने चाहिए। उस भाव के द्वारा यह बहुत बड़ी उपलब्धियां साधक तुम्हें दे कर जाएंगे और जिसका विचार—मण्डल अपने नियन्त्रण में नहीं हो पाता, उसे बहुत भटकना पड़ता है, स्वयं ही अपने भीतर दुःखी होना पड़ता है।

आज के सत्संग के दो परिणाम हैं – एक है अनुशासन और दूसरा है असफलता को शिरौधार्य करना है। हजार बार भी अनुशासन में असफलता हो, फिर से उठो। असफलता बहुत छोटी चीज है। हार कर छोड़ देना बहुत बड़ी चीज है। असफल तो मैं रोज होता हूँ दस चीजों में, हार कर छोड़ता नहीं हूँ। असफल होना बड़ी बात नहीं है, छोटी बात है, पर हार कर छोड़ना नहीं। जो हार कर छोड़ेगा नहीं, वह पहुंचेगा। वह ऐसा ढीठ है, जो भगवान को भी विवश करके मना लेगा।